[Shri K. Mohanan]

All these irregularities should be investigated by a high level body from the Ministry in an impartial manner, and in order to facilitate such an inquiry, the authority in charge of the Orissa Division of the CWC should be shifted from his post.

Thank you.

REFERENCE TO THE SERIOUS DRINKING WATER CRISIS IN MADHYA PRADESH

श्री सुरेश पचौरी (मध्य प्रदेश) : मैडम आपने इतने महत्वपूर्ण मसले पर मुझे बोलने का मौका दिया, इसके लिये मैं आपके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूं।

मैडम, मध्य प्रदेश में विन्टर रैन न होने से सूखा है और पानी की कमी से त्राही-त्राही हो रही है। हरिजन-आदिवासियों के आंचल में, नदी-नालों में पनी नहीं रह गया है। राज्य सरकार ने 25 करोड़ रुपये इस पर खर्च किये हैं। केन्द्रीय सरकार ने अभी मात्र 11 करोड़ रुपये की वित्तीय सहायता दी है। स्थिति यह है कि मध्य प्रदेश में पानी की कमी निरंतर होती जा रही है। इस स्थिति से निपटने के लिये केन्द्रीय सरकार से अपेक्षा की जाती है कि 11 करोड़ रुपये की राशि को बढ़ाकर के 60 करोड़ कर दिया जाए मैडम, मध्य प्रदेश को 30 करोड़ का ओवर ड्राफ्ट अलाऊ किया गया है जब कि आन्ध्र प्रदेश को 200-300 करोड़ का है। इसे बढ़ाया जाए, मैडम, मैं अब आपसे यह अपेक्षा करूंगा कि पानी की कमी को ध्यान में रखते हुए क्राइसेज़ को देखते हुए केन्द्रीय सरकार मध्य प्रदेश के प्रति विशेष सहानुभूतिपूर्वक रुख अपनाए। अभी हमारे भोपाल शहर में जो गैस त्रासदी हुई है उससे प्रभावित लोगों को प्रधानमन्त्री कोष से मात्र 40 लाख रुपये दिये गये हैं जबकि केन्द्रीय सरकार ने कोई वित्तीय सहायता नहीं दी है। अभी हमारे मित्र सत्यपाल जी ने बायोडेटा की तरफ ध्यान आकर्षित किया, मैं भी इस सम्बन्ध में कुछ कहना चाहूंगा मैडम, आप ताल तलैयों, शैल शिखरियों की नगरी भोपाल में जन्मी कोकिला है। भोपाल की जो स्थिति बन रही है भोपाल के लोग अभी गैस त्रासदी को भल नहीं पाए हैं, मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा भोपाल के 'दैनिक भास्कर' में 26 मार्च, 1985 को छपी न्यूज़ पर। उस बड़े तालाब से मात्र 40 दिन का पेयजल मिल सकेगा। आप जानते हैं कि राजा भोज के प्रसिद्ध भोपाल ताल में मात्र 40 दिन का पानी रह गया है और यही एकमात्र ऐसा तालाब है जो भोपाल के पेयजल का मुख्य स्रोत है और इसका दिन-प्रतिदिन गिरता हुआ जल स्तर भयावह चेतावनी दे रहा है। तो एक तरफ भोपाल के लोग भोपाल गैस त्रासदी को भूल नहीं पाए है और दूसरी तरफ भोपाल के लोगों को विकट जल समस्या का सामना करना पड़ रहा है। तो भोपाल के प्रसिद्ध कवि स्वर्गीय दुष्यंत जी की पंक्तियां मुझे याद आती हैं :—

> "फिसले जो इस तरह कि लुढ़कते चले गये,
>
> उन्हें नहीं पता था कि इतनी ढ़लान है।"

मैडम, भोपाल के लोगों की दिन-प्रति-दिन दयनीय स्थिति होती जा रही है जब कि भोपाल में पेयजल की समस्या पिछले 8 वर्षों से सिर दर्द बनी हुई है और भोपाल की आबादी दिन प्रति दिन बढ़ती चली जा रही है 9 लाख हो गई है। जल स्रोत बढ़ाने के अन्य कोई प्रयास नहीं किये गये। इस दिशा में मैं आपके माध्यम से सरकार से यह निवेदन करना चाहूंगा कि भोपाल की जल समस्या के निदान के लिए और मध्य प्रदेश में सूखाग्रस्त स्थिति से निपटने के लिए प्राथमिकता के आधार पर त्वर गति से केन्द्रीय सरकार द्वारा पहल की जाए।